2.3 पुनर्जागरण

'रिनांसा' (पुनर्जागरण) शब्द की उत्पत्ति एक इतावली कला सिद्धांतकार जोर्जिया वसारी (1511–1574) के लेखनों से हुई। उन्होंने पिछली दो सदियों का वर्णन करने के लिए रिनस्सिटा शब्द का प्रयोग किया। उसी समय फ्रांसीसी विद्वान पीयर बेकोन (1518–1564) ने 'रिनांसा' शब्द का प्रयोग किया, जिसका अभिप्राय नए भाव में पुराशास्त्रीय प्राचीनता से था। इस आंदोलन की शुरूआत चौदहवीं सदी के आरंभ में हुई।

पुनर्जागरण एक आंदोलन नहीं बल्कि एक मनोदशा, जिसमें वर्तमान की मनोदशा, अतीत की मनोदशा, बुद्धिजीवी की मनोदशा सम्मिलित था। पुनर्जागरण ने अपनी बुद्धि, तर्क के आधार पर अपने युग के सारे परंपरागत व्यवस्थाओं पर प्रश्न खड़ा किया तथा एक वैकल्पिक एवं आधुनिक व्यवस्था के कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके परिणामस्वरुप मध्यकाल की आस्थावादी मनोदशा, तर्कवादी आधुनिक काल की मनोदशा में रुपान्तरित हो गया। इसके साथ ही साथ सांस्कृतिक एवं वैचारिक भावनाओं को मूर्त्त रुप देने में पुनर्जागरण एक सर्वाधिक सशक्त आधार बना। पुनर्जागरण मनुष्य की बौद्धिक और कलात्मक ऊर्जाओं की एक ऐसी अभिव्यक्ति थी जिसके द्वारा यूरोप ने मध्यकाल से निकल कर आधुनिक काल में प्रवेश किया इसने जीवन के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक पक्षों में भी व्यापक परिवर्तन लाया।

पुनर्जागरणकालीन साहित्य मनुष्य और मनुष्य से संबंध सभी अवयवों से जुडा था और इसकी रचना जनसामान्य की भाषाओं मे हुई थी। इस दृष्टि से पुनर्जागरण कालीन साहित्य मध्ययुगीय साहित्य से भिन्न था जिसमें धर्म की बहुलता थी और जिसकी रचना लैटिन भाषा में हुई थी। इसके अलावा, कला भी धार्मिक बंधनों से मुक्त होकर अधिक यथार्थवादी हो गयी। कला अब जीवन्त एवं आकर्षक हो गयी। लियोनार्दो द विंची (विंचि), माइकल ऐंजलों एवं राफेल आदि इस युग के प्रसिद्व कलाकार थे। इस युग में मूर्तिकला स्थापत्य कला की अधीनता से मुक्त होकर एक स्वतंत्र कला के रुप में स्थापित हुई और साथ ही एक धर्मनिरपेक्ष उद्वेश्य से भी प्रेरित होने लगी। पुनर्जागरण चेतना के प्रभाव में गोथिक स्थापत्य का अवसान हो गया।

पुनर्जागरण शब्दावली से उन सभी बौद्धिक परिवर्तन का बोध होता है जो मध्ययुग के अन्त में दृष्टिगोचर हो रहे थे। परिवर्तन से तात्पर्य सामान्तवाद की अवनति, प्राचीन साहित्य का अध्ययन, राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान, आधुनिक विज्ञान का प्रारंभ, नये व्यापारिक मार्गो की खोज, प्रारंभिक पूँजीवाद की शुरुआत इत्यादि। इतिहासकार डेविस के शब्दों में पुनर्जागरण शब्द "मानव स्वातन्त्रय प्रिय साहसी विचारों को जो मध्ययुग में धर्माधिकारियों द्वारा जकड़े एवं बंदी बना लिए गये थे, व्यक्त करता है।" फ्रांस के प्रसिद्ध इतिहासकार मूल्स मिशिलेट ने पुनर्जागरण की व्याख्या करते हुए दो ऐसे व्यापक आयामों की ओर संकेत दिया है जिनमें पुनर्जागरण सुधारवादी समग्र प्रयत्न आ जाते है। ये दो आयाम है – "दुनिया की खोज" और "मनुष्य की खोज।" दुनिया की खोज से तात्पर्य था – 15वीं–16वीं शताब्दी की उन भौगोलिक उपलब्धियों से है जिसने अटलांटिक, प्रशांत और हिंद महासागर को व्यापार के लिए खोल। और पुरानी दुनिया के लोगों को अमेरिका की नई दुनिया, दक्षिणी अफ्रीका और आस्ट्रेलिया का परिचय कराया। "मनुष्य के खोज" के अन्तर्गत मानव शक्ति के उस पक्ष को लिया गया, जिसके द्वारा उसने मध्यकालीन पोपशाही को अस्वीकार किया तथा विकसीत एवं स्वतंत्र दृष्टि से अवलंवन किया।

2.3.1 पुनर्जागरण के तत्व

- उत्सुकता एवं जिज्ञासा और खोजी दृष्टि का उदय। (Curiosity and spirit of enquity)
- साहसिक मनोभावों का उदय। (Spirit of adventure)
- व्यक्तिवाद (Individualism)– आत्मतुष्टि और अपनी उपलब्धियों से गौरव की अनुभूति व्यक्तिवाद का सार है।
- धर्मनिरपेक्षता– इसका अभिप्राय है (क) सांसारिक कार्यो में अधिक अभिरुचि लेना तथा (ख) वैसे पादरियों की आलोचना जो आत्मत्याग की बात करते है परंतु उनका पालन नहीं करते।
- मनवतावाद– इसका अर्थ हैं मनुष्य की विशिष्ट गरिमा को पहचानना। इस समय मनुष्य को सभी प्राणियों से सर्वश्रेष्ठ माना गया तथा उसकी प्रतिभा का सम्मान किया जाने लगा।
- ऐतिहासिक आत्मचेतना (Historical Self consciousness)– यह इतिहास के प्रति बदलती हुई दृष्टि का परिचायक था।

बोध प्रश्नः

1 पुनर्जागरण का क्या अर्थ है ?

2 पुनर्जागरणकालीन कला एवं सहित्य की क्या विशेषताएँ थी ?

3 व्यक्तिवाद और मानववाद के विकास में पुनर्जागरण क्या भूमिका निभायी ?

2.3.2 पुनर्जागरण के कारण

पीटरबर्क के अनुसार, प्रबुद्धवादी लेखकों ने इस घटना के दो कारण बताए–स्वतंत्रता और इटलीवासियों की संपन्नता। शाफ्रट्सबरी मानते थे कि चित्रकला का पुनर्जीवन वेनिस, जेनोआ और फ्रलोरेंस जैसे स्वतंत्र राज्यों में नागरिक स्वतंत्रता के कारण हुआ। सिसमोंडी पुनर्जागरण के विकास में इतावली शहरों की आर्थिक सम्पन्नता तथा स्वतंत्रता का होना के महत्त्व पर बल देते थे। प्रबुद्धवादियों का मानना था कि स्वतंत्रता वाणिज्य को प्रोत्साहित करती है।

पुनर्जागरण का एक प्रमुख कारण आर्थिक तथा व्यापारिक समृद्धि थी। धर्मयुद्धों के क्रम में यूरोप के पूर्वी देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। व्यापारियों का जमघट जेरूसलम तथा एशिया माइनर के तटों पर होने लगा था। परिणामस्वरूप व्यापार में वृद्धि हुई। व्यापारिक समृद्धि के कारण यूरोपीय व्यापारियों का विभिन्न देशों से संपर्क हुआ जहॉ वे नये विचारों और प्रगतिशील तत्वों से अवगत हुए। व्यापारिक वृद्धि के कारण नये नगरों का जन्म हुआ। उदाहरण हेतु वेनिस, मिलान, फलोरेंस, न्यूरेमबर्ग आदि का संपर्क विभिन्न क्षेत्रों से स्थापित हुआ। इसके कारण विचारों का भी आदान प्रदान संभव हुआ तथा ज्ञान के विकास में सहायता मिली। व्यापारिक विकास से व्यापारियों के पास धन का संकेद्रण बढा। नवोदित व्यापारी वर्ग अब विधार्जन का लाभ उठाया। मध्ययुग में केवल पादरियों को यह अवसर प्राप्त था। अब जनसाधारण भी सहजता से ज्ञान अर्जित कर सकता था।

13वीं –14वीं शताब्दियों में व्यापारिक नगर शक्तिशाली नगर–राज्य बन गए और वे आस–पास के ग्रमीण इलाकों के राजनीतिक और आर्थिक जीवन पर अपना प्रभुत्व जमाने लगे। इस प्रकार शहरी केद्रों में रहने से इटली का अभिजातवर्ग सार्वजनिक मामलों में हिस्सा लेने लगा। नये धनाढय समुदायों ने अभिजातवर्ग का दर्जा हासिल करने की कोशिश की। इसके अलावा इटली में कुलीन वर्ग की स्थिति भी यूरोप के लोगों के कुलीन वर्ग से अलग थी। इटली के व्यवसायिक वर्ग के द्वारा नये विचारों, साहित्य कला को प्रोत्साहन दिया गया। इस प्रकार इटली में नयी विचारधारा के उद्भव के लिए उपयुक्त पृष्ठभूमि तैयार हुई।

इसके अतिरिक्त इटली का भौगोलिक अवस्थिति इसे पूर्व और पश्चिम के बीच का प्रकृतिक द्वारा बना दिया था। वेनिस, फलोरेंस, जेनोआ अदि नगरों का एशियाई देशों के साथ निर्बाध रूप के व्यापार चलता था।

2.3.3 पुनर्जागरण और धर्मयुद्ध

पुनर्जागरण की स्थापना में धर्मयुद्ध का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरापवासियों का पूरब के लोगों के साथ संपर्क हुआ, जो ज्ञान के प्रकाश से आलोकित थे। धर्मयुद्धों ने भौगोलिक खोजों को प्रोत्साहन दिया। परिणामस्वरूप यूरोपीय लोगों द्वारा लंबी यात्राऍ किया जाने लगा और बौद्धिक विकास को बढ़ावा मिला। अरस्तु के वैचारिक ग्रंथ, अरबी अंकगणित, बीजगणित, दिशासूचक यंत्र, कागज आदि का यूरोपीय लोगों से संपर्क हुआ।

1453 में पूर्वी रोमन साम्राज्य के पतन के बाद बाइजेंटाइन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया पर उस्मानी तुर्की ने अपना आधिपत्य कायम किया। कुस्तुनतुनिया यूनानी, ज्ञान, दर्शन, विज्ञान, स्थापत्य कला एवं संस्कृति का मुख्य केन्द्र थी। परंतु तुर्को के उपेक्षापूर्ण नीति के कारण विद्वानों, कलाकारों, दर्शनिको और स्थापत्यकारों को कुस्तुनतुनिया छोड़ने के लिए मजबूर किया। यहॉ के बुद्धिजीवी, कलाकार, कारीगर इटली, फ्रॉस, इग्लैण्ड आदि पश्चिमी यूरोप के देशों में जाकर बस गए। पुनः इनके द्वारा क्लासिकल साहित्य एवं कला के विकास को बढ़ावा